टोंक भास्कर

निवाई . देवली . मालपुरा . टोडारायसिंह . उनियारा . दूनी | जयपुर | शुक्रवार 27 जून, 2014 | पीपलू . पचेवर . लांबाहरिसिंह . नासिरदा . अलीगढ़ . बंथली

पांच साल में एक करोड़ खर्च, बने 150 शॉल

केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविका नगर में कश्मीरी बकरी पशमीना की ऊन के उत्पाद की शोध में गड़बड़ी की आशंका

कार्यालय संवाददाता | मालपुरा

केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविका नगर के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अनुसंधानों को भले ही राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली हो लेकिन विभिन्न शोध कार्यों पर करोड़ों खर्च के बावजूद देश या प्रदेश तथा क्षेत्र के आमजनों को शोधित तकनीक के उत्पादों का पता तक नहीं है। संस्थान के दस्तावेजों में दर्ज आंकड़ों के अनुसार बीते पांच सालों के दौरान संस्थान में नेशनल एग्रीकल्चर इनोवेट प्रोग्राम के तहत कश्मीर की पहाडियों में पाई जाने वाली पशमीना बकरी की अत्यंत कोमल व हल्की परंतु अत्यधिक गर्म व कीमती कही जाने वाली पशमीना ऊन के उत्पाद संबंधी शोध पर करीब एक करोड़ रुपए व्यय किए गए है। शेरे कश्मीर विश्वविद्यालय के माध्यम से नेशनल एग्रीकल्चर इनोवेटो प्रोग्राम एनआईपी के एक करोड़ के इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत पशमीना बकरी के सॉफ्ट गोल्ड फाइबर के उत्पादों के लिए पांच साल में विभिन्न अनुसंधान के बाद पशमीना शॉल व पशमीना मिश्रित अन्य उत्पाद तैयार करने की तकनीक विकसित की गई। पांच साल में नमूने के डेढ़ सौ शॉल -खास बात यह है कि करीब दस हजार रुपए प्रति किलो बिकने वाली कश्मीरी बकरी की कई किलो पशमीना बरबाद करने के बाद संस्थान के वस्त्र निर्माण एवं वस्त्र रसायन विभाग द्वारा मात्र डेढ़ सौ पशमीना शॉल तैयार किए । केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान के वस्त्र निर्माण एवं वस्त्र रसायन विभाग के प्रभारी वैज्ञानिक डॉ.डी.बी.शाक्यवार ने बताया है कि पांच के अनुसंधानिक कार्य के अंत में अर्जित तकनीक के आधार पर तैयार किए गए पशमीना शॉल डेढ़ सौ नमूनों में से करीब 60 पीस जांच के दौरान नष्ट हो गए जबकि शेष कीमती पशमीना शॉलों में कुछ बेचे गए हैं। संस्थान में चर्चा यह है कि अनुसंधान के दौरान तैयार किए जाने वाले कीमती वस्त्रों में टेस्टिंग के नाम गड़बड़ी की जा रही है। कश्मीरी बकरी के पशमीना से निर्मित शॉल की कीमत 2250 रुपए है जबकि स्टॉल की कीमत 1250 है। एनपीआई के शोध व प्रशिक्षण कार्यक्रम को वर्ल्ड बैंक ने टॉप 10 में शामिल किया है।

मालपुरा. केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केंद्र अविकानगर के कारखाने में मशीनों से वस्त्र निर्माण करते संस्थान कर्मी।

दो करोड़ के अन्य प्रोजेक्ट चल रहे हैं

केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में करीब दो करोड़ के अन्य कार्यक्रम संचालित हैं। इनमें से 12 लाख के खर्चे का प्रशिक्षण कार्यक्रम भी संस्थान को मिला है इसमें दस दस महिलाओं को तीन तीन माह तक एक साल दौरान हस्तशिल्प से ऊनी सामान तैयार कराने के अलावा प्रशिक्षण के बाद ऊन से घरेलू व्यवसाय चलाने की जानकारी दी जा रही है। संस्थान को 40 लाख रुपए भेड़ों के स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम संचालित करने के लिए एवं 25 लाख रुपए आरएनडी प्रोजेक्ट के लिए दिए गए हैं।

जिम्मेदारों के जवाब

केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एस.एम.के नकवी का कहना है कि अविकानगर संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अनुसंधानों ने विश्व स्तर पर नाम कमाया है। पशमीना बकरी के ऊन से वस्त्र निर्माण की तकनीक विश्व इतिहास में पहली तकनीक है जो सफल हुई है। उन्होंने गड़बड़ी के आरोपों को खारिज कर केंद्रीय भेड एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के वस्त्र निर्माण एवं वस्त्र रसायन विभाग के प्रभारी वैज्ञानिक डॉ. डी. बी. शाक्यवार का कहना है कि अनुसंधान दौरान बनाए गए नमूनों का रिकार्ड रखा जाता है। इसमें कोई गड़बड़ी नहीं की जा सकती है। विभिन्न योजनाओं के कार्य व शोध प्रगति पर है। पशमीना शॉल के बाद अब पशमीना वस्त्र निर्माण की योजना है।